Vol 2 Issue 12 Sep 2013

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

Review Of Research
Vol. 2, Issue. 12, Sept. 2013
ISSN:-2249-894X
Available online at www.reviewofresearch.net
ORIGINAL ARTICLE

रघुवीर सहाय के काव्य मे "जनता" की अवधारणा

Pankaj Singh
Hindi Literature, Allahabad University.

प्रस्तावना :

लोकतांत्रिक शासन–प्रणाली में जनता द्वारा चुने हुए प्रतिनिधि शासन चलाते हैं। अप्रत्यक्ष रूप से जनता इस शासन–प्रक्रिया में भागीदार होती है। लेकिन लोकतंत्र का यह रूप केवल सैद्धान्तिक दृष्टि से ही अच्छा है, व्यावहारिक तौर पर देखें तो इसमें कई कमियाँ मिलती हैं। अपनी इन्हीं खामियों के कारण लोकतंत्र कई बार भीड़तंत्र में तब्दील हो जाता है।

वास्तव में जनता लोकतंत्र में सत्ता में भागीदार होते हुए भी, उससे बहुत दूर होती है। सत्ता से यह दूरी जनता के स्वयं के आचरण के कारण उत्पन्न होती है। वह ऐसे लोगों को अपना प्रतिनिधि चुनती है जो निहायत भ्रष्ट, बेईमान एवं मौकापरस्त होते हैं। ये अपने व्यक्तिगत हित एवं स्वार्थ के लिए अपने पद का दुरूपयोग करते हैं। इनके सारे राजनीतिक दाँव–पेंच और खेल अवसरवाद से प्रेरित होते हैं। नेता, नौकरशाह और अपराधियों के अपवित्र गठजोड़ से लोकतांत्रिक सरकार की मूल अवधारणा ही खंडित हो जाती है।

इन सब विसंगतियों के लिए काफी हद तक जनता ही जिम्मेदार है। वह ही जाति, धर्म, सम्प्रदाय जैसी संकीर्णताओं के आधार पर उम्मीदवारों का चयन करती है। उम्मीदवार कितना ही बेईमान, भ्रष्ट और दुराचारी हो, किन्तु यदि वह सजातीय है तो ये सारे दोष कोई मायने नहीं रखते। जातिवादी राजनीति के उफान ने बहुत से आपराधिक पृष्ठभूमि के लोगों को भी संसद और विधानमंडलों तक पहँचाया।

कई बार ऐसा भी होता है कि जनता धन और बल के प्रदर्शन से भी सम्मोहित हो उठती है। उसकी इस प्रवृत्ति का लाभ अपराधी, बाहुबली और पूँजीपतियों को मिलता है। जनता की इसी अविवेकशीलता पर रघुवीर सहाय खीझते हैं। 'आत्महत्या के विरुद्ध' नामक अपनी प्रसिद्ध कविता में सहाय जनता को लक्ष्य कर लिखते हैं–

''एक मेरी मुश्किल है जनता
जिससे मुझे नफरत है सच्ची और निस्संग
जिस पर कि मेरा क्रोध बार–बार न्योछावर होता है।''[1]

यह सही है कि सहाय जनता के व्यवहार से काफी क्षुब्ध होते हैं, उस पर अपना क्रोध प्रकट करते हैं; लेकिन यह सब जनता के प्रति गहरे लगाव के कारण होता है। उन्हें लगता है कि जनता अविवेकपूर्ण व्यवहार करके अपना ही अहित करती है। वह भ्रष्ट लोगों को चुनकर अपने पैरों पर कुल्हाड़ी क्यों मारती है? लेकिन अपने तमाम गुस्से और क्षोभ के बावजूद जनता के प्रति एक गहरी जिम्मेदारी का भाव सहाय के मन में है–

''मैं बदमाशों, गधों, आधे पागलों और मक्कारों के लिए एक जिम्मेदारी
महसूस करता हूँ, पर जो कुछ मैं रचता हूँ, सिर्फ अपनी जिम्मेदारी पर
रचता हूँ– या फिर नहीं रचता।''[2]

सहाय को जनता के पाखण्डपूर्ण चरित्र से नफरत है। बहुत सारी सामाजिक–राजनीतिक अव्यवस्थाओं के मूल में जनता की यही दोहरी मानसिकता है। लोग बातें तो बहुत बड़ी–बड़ी लेते हैं, लेकिन व्यावहारिक जीवन में उसे उतार नहीं पाते।

बहुत सारे बुद्धिजीवी ऐसे मिल जाएंगे जो जाति और धर्म के नाम पर की जाने वाली राजनीति की खुले तौर पर तो निंदा करेंगे और अपने को प्रगतिशील साबित करने की कोशिश करेंगे लेकिन चुनाव के समय इन्हीं संकीर्णताओं के आधार पर ही मतदान करते हैं।

जनता के इसी दोहरेपन को उजागर करते हुए सहाय लिखते हैं–

''गया वाजपेयी जी से पूछ आया देश का हाल
पर उढ़ा नहीं सका एक नंगी औरत को
कम्बल रेलगाड़ी में बीस अजनबियों के सामने
बेचू वल्द, निरछू, ढोड़े मँगरे पाँचू गोबरे
पाचँ भाई
बैठे थे।''[3]

सच तो यह है कि जनता 'विवेकवान जनता' नहीं बल्कि 'मूर्ख भीड़' है। 'भीड़' के पास सही और गलत का विवेक नहीं होता। आगे के चार–छः लोग जो करते हैं, उसी का अनुकरण पीछे खड़ी पूरी की पूरी भीड़ करती है। भीड़ में अन्धानुकरण की प्रवृत्ति होती है। वह तर्क और विवेक की कसौटी पर चीजों को परखना नहीं जानती। यही कारण है कि सहाय 'भीड़ के कायल' तनिक भी नहीं हैं। उन्होंने लिखा भी है–

''भीड़ में मैलखोरी गंध मिली
भीड़ में आदिम मूर्खता की गंध मिली
भीड़ में
मुझे नहीं मिली मेरी गंध
जब मैंने साँस भर उसे सूँघा।''[4]

वास्तव में सहाय बदलाव के पक्षधर हैं। वे तमाम राजनीतिक– सामाजिक विसंगतियों से मुक्ति चाहते हैं। किन्तु यहाँ समस्या यह है कि 'मुक्ति' तभी मिलेगी जब 'विवेकपूर्ण निर्णय' का सहारा लिया जाए। सहाय के लिए अफसोस की बात यह है कि भीड़ में 'विवेक' की जगह 'आदिम मूर्खता' की गंध व्याप्त है। सहाय को भीड़ में अंततः 'मैलखेरी गंध' ही मिलती है। परिवर्तन तभी होगा जब 'भीड़', 'प्रबुद्ध जनता' के रूप में तब्दील होगी। 'आदिम मूर्खता' बदलकर 'विवेकशीलता' हो जाएगी।

इस परिवर्तन का एकमात्र साधन है– सत्ता का सदुपयोग। जनता के जीवन–स्तर, रहन–सहन और उसके समग्र सामाजिक–राजनीतिक स्थितियों में बदलाव का सूत्र शासन–सत्ता के उसके हित में सदुपयोग में निहित है। यही कारण है कि रघुवीर सहाय लिखते भी हैं–

''विराट भीड़ों के समाज को बदलने का आज सिर्फ एक साधन है; वह है सत्ता का उपयोग, जो समुदाय का एक–एक व्यक्ति अलग–अलग निर्णयों से कुछ हाथों में देता है। सरकार, जो राज्य की प्रतिनिधि है, जो समाज की प्रतिनिधि है, जैसी भी वह हो सकती है– अधूरी, टूटी, नकली, मिलावटी, मूर्ख– अकेला कारगर साधन भीड़ के हाथ में है।''[5]

सहाय इस भीड़ का सकारात्मक उपयोग करना चाहते हैं। वे सक्रिय साहित्यकार हैं। अपने मोर्चे पर पूरी तन्मयता से लड़ना जानते हैं। दरअसल ये साहित्यिक और बौद्धिक स्तर पर जनता का नेतृत्व करते हैं। वे 'आदिम मूर्खता' से भरी हुई भीड़ को 'प्रबुद्ध जनता' बनाकर लोकतांत्रिक विडम्बनाओं से संघर्ष करना चाहते हैं। वे कहते भी हैं कि ''मैं इस साधन के अधिक–से –अधिक सही इस्तेमाल के लिए लड़े बिना नहीं रह सकता। लेकिन इसके माने यह नहीं कि मैं भीड़ का कायल हूँ।''[6]

लेकिन जनता इतनी जड़ हो चुकी है कि कभी–कभी रघुवीर सहाय के मन में कई तरह की आशंकाएँ भी उठ खड़ी होती हैं। उन्हें लगता है कि कहीं लोग 'शासन तंत्र' को बदलने की जगह अपने को ही अवसरवादी तरीके से न बदलने लगें। भ्रष्ट राजनेताओं का 'अवसरवादी रोग' कहीं जनता को भी न लग जाए। वह भी कहीं दोहरे मानदण्ड न अपनाने लगे। कहे कुछ, और करे कुछ और–

''हो सकता है कि लोग लोग मार तमाम लोग
जिनसे मुझे नफरत है मिल जाएँ, अहंकारी
शासन को बदलने के बदले अपने को
बदलने लगें और मेरी कविता की नकलें
अकविता जाएँ। बनिया बनिया रहे बाम्हन बाम्हन और कायथ कायथ रहे
पर जब कविता लिखे जो आधुनिक
हो जाए। सीखें बा दे जब कहो तब गा दे।''[7]

लेकिन इन सब चिन्ताओं एवं आशंकाओं के बावजूद सहाय सामाजिक–राजनीतिक बदलाव के लिए प्रतिबद्ध हैं। वे जनता को उसकी अपनी स्थितियों पर नहीं छोड़ सकते। उसकी मूर्खता पर खीझते हुए भी उसके प्रति अपनी एक जिम्मेदारी समझते हैं। यही जिम्मेदार का भाव उन्हें एक खास किस्म के साहित्य–सृजन की तरफ उन्मुख करता है। सामाजिक–राजनीतिक परिवर्तन की यह लड़ाई सहाय अपने मोर्चे–साहित्यिक मोर्चे–पर बखूबी लड़ते हैं। उनकी राय में सत्ता को बदलने का माध्यम जनता है और जनता को बदलने का माध्यम सत्ता। इस प्रकार रघुवीर सहाय 'सत्ता' और 'जनता' के बीच एक नये तरह का अन्तर्सम्बन्ध स्थापित करते हैं।

दरअसल जनता का जागरूक न होना या संकीर्ण मान्यताओं का पालन करना ही सारी

राजनीतिक–सामाजिक बीमारी का मूल है। जनता की यह जड़ता और उदासीनता सहाय के समय का ही लक्षण नहीं है, वर्तमान परिदृश्य भी कुछ ऐसा ही है। प्रसिद्ध समाजशास्त्री प्रो0 इम्तियाज अहमद का मत है कि ''आम अवधारणा है कि नेता बेईमान हैं, उनके ऊपर अंकुश लगाने की जरूरत है। हम यह सवाल अपने से नहीं करते कि नेता को भ्रष्ट कौन बनाता है। हमीं तो अपने सही या गलत काम करवाने के लिए उनको रिश्वत देते हैं।''[8]

वास्तव में सच तो यह है कि ''भ्रष्टाचार पर कारगर ढंग से अंकुश लगाने के लिए आम भारतीयों को अपने आचरण में तब्दीली लानी होगी। लोगों को अपना काम कराने के लिए सुविधा शुल्क देने की आदत छोड़ने के साथ–साथ नैतिक–अनैतिक में भेद करना भी सीखना होगा।''9 लोग अपने स्वार्थ के लिए कई बार फैसले बदलते हैं। जिस निर्णय से उन्हें लाभ मिलता है, उसी को उचित मान लेते हैं। जनता की यह घोर अवसारवादी प्रवृत्ति लोकतंत्र के स्वस्थ स्वरूप को विकृत करती है। रघुवीर सहाय की कई कविताओं में जनता के इस जड़ स्वभाव पर करारा व्यंग्य किया गया है।

वस्तुतः जनता का यह स्वभाव सहाय के समय से लेकर आज तक यथावत बना हुआ है। लोग सदाचारी और दुराचारी प्रत्याशी में सही ढंग से अंतर नहीं कर पाते। हर बार वे जाति, धर्म एवं सम्प्रदाय जैसी तुच्छ बातों के आधार पर मतदान कर बैठते हैं। भ्रष्टाचार के खिलाफ मुहिम चलाने वाले अन्ना हजारे के निम्न कथन से इसी बात की पुष्टि होती है–

> ''पाँच राज्यों में होने जा रहे विधानसभा चुनाव में मैं कोई पक्ष और पार्टी
> का नाम नहीं लेते हुए मतदाताओं से सदाचारी लोगों को वोट करने के
> लिए कहूँगा। लोगों को भ्रष्ट, गुंडे, लुटेरे लोगों को वोट नहीं देने के
> लिए कहूँगा।''[10]

स्वस्थ एवं स्वच्छ लोकतंत्र में भ्रष्टाचारियों, गुंडों, एवं लुटेरों के लिए कोई स्थान नहीं होता। जनता को अपने मनमुताबिक प्रतिनिधि चुनने का अधिकार होता है। वह ऐसे लोगों को नकार सकती है जिनका राजनीतिक या सामाजिक इतिहास कलंकित होता है; जो स्वार्थी एवं अवसरवादी होते हैं। वह ऐसे लोगों को स्वतंत्रतापूर्वक चुन सकती हैं जो 'वेलफेयर स्टेट' की अवधारणा को कारगर बनाने में सक्षम हों।

वास्तव में जनता को ऐसा 'नेतृत्व' स्वीकार करना चाहिए, जिसके मन में आमजन के प्रति सहानुभूति हो, जो 'समानता' एवं 'न्याय' जैसे मूल्यों में विश्वास करता हो। जनकवि नागार्जुन ने अपनी चर्चित कविता 'हरिजनगाथा' में नेतृत्व के जिस रूप की परिकल्पना की है, वह वास्तव में न केवल सराहनीय है, बल्कि वांछनीय भी–

> ''सबके दुख में दुखी रहेगा
> सबके सुख में सुख मानेगा
> समझ–बूझकर ही समता का
> असली मुद्दा पहचानेगा।''[11]

जनता के विवेक पर निर्भर करता है कि लोकतंत्र का स्वरूप कैसा होगा। सुंदर और सुघड़ या वीभत्स और विद्रूप! उम्मीदवारों को पहचानना इतना भी मुश्किल नहीं होता। उनके भूत और वर्तमान के कृत्य उनके चेहरे पर प्रतिबिम्बित होते रहते हैं। बस जरूरत इस बात की होती है कि हम संकीर्ण मान्यताओं से ऊपर उठकर सोच सकें। नागार्जुन का परिकल्पित नेतृत्व अलग ही चमकता है। और ऐसे नेतृत्व की पहचान एकदम सहज और सरल है–

> ''इसकी अपनी पार्टी होगी
> इसका अपना ही दल होगा
> अरे देखना, इसके लेखे
> जंगल में ही मंगल होगा।''[12]

वास्तव में रघुवीर सहाय भी कुछ ऐसे ही नेतृत्व की बात करते हैं। वे चाहते हैं कि जनता ईमानदार और भ्रष्ट राजनेता में अंतर करना सीखे। उन लोगों को चुनकर विधायिकाओं में भेजे, जो उसके दुख–दर्द को समझ सकें। नागार्जुन की परिकल्पना कि ''सबके दुख में दुखी रहेगा। सबके सुख में सुख मानेगा'' को सहाय अपने शब्दों में इस तरह से व्यक्त करते हैं–

> ''उसके दिल की घड़कन
> उस दिल की धड़कन है
> भीड़ के शिकार के
> सीने में जो है।''[13]

सन्दर्भ सूची :

1. रघुवीर सहाय, रचनावली–1, 'आत्महत्या के विरुद्ध', सं0– सुरेश शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–2000, पृ0 108.
2. रघुवीर सहाय, रचनावली–1, सं0– सुरेश शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–2000, पृ0 103.
3. वही, पृ0 113.
4. वही, पृ0 113.

5. वही, पृ0 103.
6. वही, पृ0 103.
7. वही, 'स्वाधीन व्यक्ति', पृ0 108.
8. दैनिक जागरण, सम्पादकीय, 06 नवम्बर 2011, लखनऊ संस्करण, पृ0 11.
9. दैनिक जागरण, सम्पादकीय, 06 नवम्बर 2011, लखनऊ संस्करण, पृ0 10.
10. जनसत्ता, 02 नवम्बर, लखनऊ संस्करण, पृ0 1.
11. नागार्जुन : प्रतिनिधि कविताएँ, सं0– नामवर सिंह, 'हरिजनगाथा', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, तीसरा संस्करण, 1988, पृ0 141.
12. वही, 'हरिजनगाथा', पृ0 141.
13. रघुवीर सहाय, रचनावली–1, 'मेरा प्रतिनिधि', सं0– सुरेश शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–2000, पृ0 109.

Pankaj Singh
Hindi Literature, Allahabad University.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.ror.isrj.org